

भीलों की सांस्कृतिक धरोहर – बाँसवाड़ा जिले के विशेष सन्दर्भ में

डॉ.प्रेमचंद डाबी

सर्वोदय महा विधालय, कलिंगरा

जिला – बाँसवाड़ा

भील लोग भारत भूमि के प्राचीनतम मूल आदिवासी और मालिक माने जाते हैं। आर.वी.रसेल ने अपनी पुस्तक “द ट्राइब्स एन कस्टम ऑफ द सेंट्रल प्रोविन्सेस ऑफ इंडिया” में खानदेश, राजपुताना और मध्यप्रदेश की पर्वतश्रेणियों तथा गुजरात के सतपुड़ा से समुद्र तक फैले भूभाग को भील देश माना है। वर्तमान में भी भील भारत की आदिवासी जातियों में से प्रमुख जाति है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत में प्रथम स्थान है। भील जनजाति देश के प्रमुख चार राज्य राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र में पाई जाती है। इन चार राज्यों की सीमा पर भीलों का जमावड़ा देखने को मिलता है इसलिए ये चार राज्य भीलों के घर कहे जाते हैं।

राजस्थान में भील क्षेत्र का फैलाव व्यापक है। भील राजस्थान के प्रत्येक जिले में निवास करते हैं। लेकिन इनका बाहुल्य राज्य के दक्षिणी भागों में ज्यादा देखने को मिलता है। दक्षिणी राजस्थान के बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़, सिराही, राजसमन्द के नाथद्वारा, कुम्भलगढ़, राजसमन्द, भीलवाड़ा जिले के मांडलगढ़ व चित्तोडगढ़ जिले के भेसोडगढ़ में भील ज्यादा निवास करते हैं।

आदिवासियों में अन्य जनजातियों की भांति भील जनजाति की अपनी अलग कला संस्कृति व परंपरा रही है। भीलों की संस्कृति भारत की नैसर्गिक धरोहर है। जिसमें भीलों का जीवन, आह्लाद और संघर्ष दोनों ही पक्ष परिलक्षित होते हैं। उनका आह्लाद देश की उर्जा व उनका जीवन संघर्ष हमारी प्रेरणा है। भीलों की अपनी अलग जीवन शैली, परम्पराएँ, संस्कार, खानपान, रहन सहन, पहनावा, तीज-त्यौहार, पूजा अनुष्ठान, नृत्य संगीत, संस्कार विशिष्ट पहचान अन्य जातियों से अलग हैं।

भीलों की अपनी पहचान उनकी संस्कृति में देखने को मिलती है। ये संस्कृति के विभिन्न अंग उनकी सांस्कृतिक धरोहर है। सांस्कृतिक धरोहर में मुख्य रूप से हलमा, जातर(नवाई), माँडला, सिरा बावसी, भराडी(भित्ति चित्र), गोदना, नोतरा, भील पंचायत उनकी विशिष्ट पहचान व धरोहर मानी गयी है। जिनका यहाँ विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

(1) **हलमा** – हलमा भीलों की सांस्कृतिक धरोहर है। यह प्रथा आदिवासी भीलों के अलावा किसी भी जाति व समाज में देखने को नहीं मिलती है। हलमा एक दुसरे को बिना आर्थिक बोझ से मदद करने व मदद लेने की एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें बड़ी से बड़ी समस्या व कार्य का समाधान किया जा सकता है। जैसे खेती करते समय बारी-बारी से मिलकर काम निकालना, खेत हवाई, निवाई, गुड़ाई, मकान हेतु कवेलू बनाना, घर की मरम्मत करना, फसल काटना, आदि कार्य मिलजुलकर निस्वार्थ भाव से करते हैं। दिन भर काम करने के बाद इन्हें खाना व थकान मिटाने के लिए देशी महुए की मदिरा पिलाई जाती है।

(2) **मांडला** – भीलों द्वारा अपने गाँव की खुशहाली व सुख समृद्धि के लिए सावन मास में किया जाने वाला सामूहिक पूजा पाठ मांडला कहलाता है। मांडला बैठने के लिए गाँव के सभी लोग बैठकर कर सुनियोजित तैयारियाँ करते हैं। भील पुजारी (भोपा) श्री हकरा भाई गाँव पाली तेह सज्जनगढ़ जिला बाँसवाड़ा का कहना है की फसल लहलहाने की दिनों में सावन माह में मांडला बिठाया जाता है। गाँव में सभी निवासरत लोग तथा पशुओं की महामारी, बीमारियों व विपत्तियों से बचने के लिए सामूहिक पूजा पाठ गाँव के द्वारा किया जाता है। गाँव में सभी कुल देवी देवताओं के साथ जमी माता (धरती माता), आसमान, चाँद, सूर्य को याद किया जाता है। मांडलों में रात दिन भजन कीर्तन किया जाता है। गाँव के प्रत्येक परिवार से चंदा इकठ्ठा किया जाता है जो भी सदस्य सामूहिक पूजा पाठ में उपस्थित होता है वह अपने घर से मुट्ठी भर दाने (परमाणु) लाते हैं। मांडला में मुख्य रूप से नारियल, अगरबत्ती, मिठाई, ध्वजा, रथ गाड़ी, बिडीया-खप्पर, कंकू, घी, तेल, उडद, देशी मदिरा, निम्बू, आदि चढ़ावे में प्रयोग किया जाता है। मांडले में गीतों व भजनों के द्वारा सभी कुल देवी देवताओं को याद किया जाता है तथा उनसे कामना की जाती है की हमारे गाँव के सभी लोगों व माल मवेशी को खतरों व मुसीबतों से बचाना। मांडले में सिर्फ एक ही वाद्य यन्त्र को बजाया जाता है जिसे करगस कहते हैं। माँडला के दिन गाँव में किसी प्रकार का कार्य नहीं किया जाता है यह दिन मांडले के लिए निश्चित होता है। मांडले में एक दिन छोटी बेलगाड़ी बनाकर उसे कपडे से ढक दी जाती है। दो दिन तक सभी देवी देवताओं को याद कर गाँव के सारे दुखों को उस बेलगाड़ी में भरा जाता है। जिस

समय वह दुःख भरी गाड़ी अपने आप चलने लगती है उसे लेकर गाँव के लोग हो...हो...हो... करते चिल्लाते हुए अन्न के बीज फेकते हुए दुसरे गाँव की सीमा पर उस दुःख भरी बेलगाड़ी को रख देते हैं। फिर दुसरे गाँव के लोग उस बेलगाड़ी को फिर अन्य गाँव की सीमा पर रख देते हैं।³

(3) **जातर** – (नवाई) – भील किसान खरीब फसल पकने पर बड़ी धूम धाम से जातर मनाते हैं। जातर मनाने के लिए गाँव का मुखिया लोगों के साथ मिलकर एक दिन निश्चित करता है। जातर के दिन गाँव के गोंदरे(देवरा) में नयी फसल, सब्जियाँ चढ़ाने के समय दारु व मुर्गे की बलि चढ़ायी जाती है। इसके बाद भील कृषक घर पर आकर सर्वप्रथम अपने बैलों तथा अन्य माल मवेशी को मक्का के डोडीये(भुट्टे) खिलाते हैं। तत्पश्चात वे अपने रिश्तेदारों, बेटियों व भानेज को भुट्टे खिलाने जाते हैं। इसके बाद वे नयी फसल व सब्जियाँ खाते हैं। यह परंपरा सिर्फ भीलो में ही देखने को मिलती है।⁴ जातर को केरल में ओणम, मद्रास में पोंगल, बिहार-झारखंड में करम तथा राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात के भील जातर(नवाई) कहते हैं।⁵

(4) **सिरा बावसी** – भील पूर्वज जो विशिष्ट कार्य कर गए उनकी भीलों द्वारा गातला बनाकर पूजा की जाती है। इनकी बड़ी बड़ी कहानियाँ गीतों के माध्यम से गायी जाती हैं। यदि कोई सुरवीर अपने वंश के संरक्षण में मारा गया हो तो उसका गातला बनाकर सुरमा की उपाधि से अलंकृत कर खत्री के रूप में पूजते हैं उनके सहारे अनेक कार्यों, गुणों, व्यवहार और व्यक्तित्व का बखाना होता है। उनकी यादों को जीवंत बनाने के लिए और अपनी भावनाओं व सर्वेदानों के सम्प्रेषण के लिए भीलांचल पुरखों की याद में एक अनुठी प्रथा है जिसका नाम सिरा प्रथा है।⁶

(5) **नोतरा** – नोतरा भीलों की सांस्कृतिक धरोहर है। भीलों में शादी ब्याह के अवसर पर आयोजित होने वाले नोतरा कार्यक्रम में भील बढचढकर भाग लेते हैं। नोतरे के समय भील अपनी पारंपरिक वेशभूषा के साथ लोक गीतों व लोक नृत्य के साथ नोतरे का आनंद लेते हैं। नोतरा भीलों की मुसीबत या विवाह के समय एक दुसरे को आर्थिक मदद करते हैं। भील समाज में नोतरे से गरीब से गरीब की भी शादी हो जाती है भले ही घर में एक समय का चूल्हा भी बहुत मुश्किल चलता हो दूल्हा बन ही जाता है। नोतरा प्रथा भीलों में सालो साल से चली आ रही है। नोतरा भील जनजीवन में रचा बसा है। लड़के की शादी हों तो बारात रवाना होने से पहले नोतरे की रस्म होती है। दूल्हा सजधज कर गाँवों के पंचो व महिलाओं के बीच बैठ जाता है। ढोल की आवाज के साथ नोतरा शुरू हो जाता है। जो भी व्यक्ति नोतरा रखने आता है महिलायें उसका नाम लेकर गीत गाती हैं।

सभी आमंत्रित रिश्तेदार ग्रामवासी आते हैं और अपनी अपनी हैसियत के अनुसार नोतरा यानि रूपये देते हैं। रूपया देने वाला दुल्हे व पंचो को तिलक लगा कर अभिवादन करता है। नोतरे में आये रुपयों को एक मटकी में डाला जाता है। और एक रजिस्टर में इसकी गिनती होती रहती है। यहाँ पूरा गाँव आकर कुछ ना कुछ रुपये भेंट करता है ऐसे करते करते हजारों लाखों रुपये एकत्रित हो जाते हैं। जो लोग पैसे अर्थात् नोतरा देते हैं उनके नाम रजिस्टर में लिखे जाते हैं। फिर जब उनके घर पर भी कोई आयोजन हो तो ये लोग भी वहाँ नोतरा देने चले जाते हैं। विवाह के अवसर पर ही नहीं बल्कि प्राकृतिक आपदा, मकान बनाने या कर्जा उतारने के लिए भी नोतरा आयोजन करते हैं। और जरूरत पूरी करने जितना धन एकत्रित कर लेते हैं। इस प्रकार नोतरा प्रथा भीलों में ही होती है। वह किसी और जाति में देखने को नहीं मिलता है।

(6) **भराड़ी** – भीलों के विवाह अवसर पर लाड़ा लाड़ी(दूल्हा दुल्हन) के घरों में अपने कमरे के भीतर दीवारों पर भीति चित्र भराड़ी बनाने की विशेष परंपरा भीलांचल में देखने को मिलती है। भराड़ी जिसमें कुलदेवी निवास स्थान का आकर बनाकर वर वधु की आकृति, सूर्य चन्द्र की आकृति, मोर पक्षी, फूलों आदि की आकृतियों को चावल के आटे व हल्दी मिलाकर बनायीं जाती है। भराड़ी सिर्फ जमाई ही बना सकते हैं। भराड़ी बनाते समय गाँव का पटेल भराड़ी बनाने के स्थान पर दारू व घी की धार देते हैं तथा वहाँ उपस्थित लोग दारु पीते हैं तथा वहाँ महिलाये गीत गाती हैं। लोक गीतों के माध्यम से दूल्हा व दुल्हन के गृहस्थ जीवन की कामना की जाती है। भीलों की इस देवी में खास विश्वास है की शादी की पहली रात दूल्हा व दुल्हन को भराड़ी माता के सामने जमीन पर सुलाया जाता है। जिसे नव दम्पति द्वारा वंश बढ़ाने की कामना की जाती है। इस दिन लडकिया गीत भी गाती है जो भील प्रदेश में काफी प्रचलित है जैसे “भराड़ी नि भीत माँ धमाधम वाजे रे”। भील दूल्हा अपनी दुल्हन का पहला आना लेने जाता है तो दुल्हन के वहाँ बनी भराड़ी पूजने के लिए उसे गोत्रों के अनुसार चढ़ावा करना होता है। कई भीलों के गोत्र घी, सिरमु, नारियल, मदिरा तथा बकरों की बलि भी देते हैं।⁷

(7) **गोदना** – भीलों में शरीर के अंगो मे गुदवाने की प्रथा का प्रचलन है। गोदने को वे एक ऐसा अलंकरण मानते है की जो शरीर के छूटने के बाद भी आत्मा का श्रंगार करता है। भील अधिक सुन्दर व आकर्षक बनते हैं। वह सौंदर्य प्रसाधन का यह सस्ता व स्थायी समाधान मानते हैं। गोदने की प्रथा स्त्रियों मे अत्यधिक प्रचलित व लोकप्रिय है। भील मुख्य रूप से हाथों, पैरों, गालो व ललाट के आदि भागो में गुदवाते है। गुदावनो मे मयूर, आम, दाना, फुल, तीर, चाँद, तारे, छतरी, अपने माता पिता, पति, प्रेमी प्रेमिका का नाम व जाति तथा अन्य चित्र गुदवाते हैं। भीलों का मानना है की मरने के बाद शरीर से सारे आभूषण निकाल लिए जाते है पर गोदने के निशान शरीर पर हमेशा रहेगे उनका मानना है कि जब हमारी आत्मा ईश्वर के पास जाएगी तो ईश्वर पूछेगा की “तूने धान खादू पर ढामाला कां” अर्थात तूने धरती पर रहते हुए धान (अनाज) खाया पर स्वर्ग में क्या निशानी लेकर आये हो, तब हमारी आत्मा गोदने के निशान बताएगी।⁸

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मेहता प्रकाश चन्द्र – भारत के आदिवासी अ.उ.भील, प्र.स. 54, प्रकाशक डी.के.तलदार, शिवा पब्लिशर्स हिरन मगरी उदयपुर(राज.) 1993
2. डामोर डॉ धनेश्वर – अरावली उद्घोष - आदिवासी भील संस्कृति एवं परम्पराये प्र.स. 40
3. भोपा श्री लाल सिंह कतार उम्र 70, श्री हकरा भाई उम्र 65 एवं मांडले में उपस्थित समस्त ग्रामवासी पाली बड़ी तेह सज्जनगढ जिला बांसवाड़ा(राज.) से साक्षात्कार से दिनांक 16/08/2015 को प्राप्त.
4. श्री कलसिंह शूर सरपंच ग्राम पंचायत पाली बड़ी तेह सज्जनगढ जिला बांसवाड़ा से दिनांक 1/08/2019 को साक्षात्कार के दौरान प्राप्त.
5. गरासिया मारकुश भील grammar with glossary - प्रकाशक जीवन दीप कम्युनिकेशन ठीकरिया बांसवाड़ा.
6. राजस्थान पत्रिका – वागड़ संस्करण 25 अप्रैल 2004.
7. मछार पिथा भाई उम्र 70, गाँव भवरकोट तेह कुशलगढ जिला – बांसवाड़ा(राज.) से दिनांक 25/07/2019 को साक्षात्कार के दौरान प्राप्त हुआ।
8. एतरी w/o वालू सिंह कटारा उम्र 55 गाँव झिकली तेह कुशलगढ जिला – बांसवाड़ा(राज.) से साक्षात्कार के दौरान प्राप्त।

डॉ.प्रेमचंद डाबी

सर्वोदय महा विधालय,कलिंगरा

ज़िला – बाँसवाड़ा